R.N.I.-CHHHIN/2010/36256 वर्ष 7, अंक 25, जुलाई - सितंबर 2016 I.S.S.N.-2320-3455

राष्ट्रसेतु
RASHTRASETU

Peer Reviewed / Refereed
Research Journal in Hindi

भारतीय साहित्य एवं भाषा समन्वय की
पुरस्कृत और पंजीकृत शोध पत्रिका

Scanned by TapScanner

R.N.I. No. CHHHIN/2010/36256 ISSN - 2320-3455

राष्ट्रसेतु RASHTRASETU

(भाषा समन्वय एवं भारतीय साहित्य की पुरस्कृत विश्वविद्यालयीन शोध पत्रिका)

Peer Reviewed / Refereed Research Journal in Hindi

वर्ष -7 ■ जुलाई - सितंबर 2016 अंक - 25

प्रधान सम्पादक :

जगदीश यादव

संरक्षक एवं सलाहकार मंडल

1 डॉ. म.मा. कडू, नागपुर
1 डॉ. एम. शेषन, (चेन्नई)
1 डॉ. इंदरराज बैद, चेन्नई
1 डॉ. एन. सुंदरम, चेन्नई
1 डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर प्रेमी, बेंगलूर
1 डॉ. युगल किशोर डोगरा
1 डॉ. उषा श्रीवास्तव
1 अनल प्रकाश शुक्ल
1 डॉ. आर. एम. श्रीनिवासन
1 डॉ. आरसु, कालिकट (केरल)
1 डॉ. प्रमोद कोवप्रत, कालिकट वि.वि.(केरल)
1 डॉ. तिप्पेस्वामी, मैसूर
1 डॉ. कल्पना के. बुद्धदेव, राजकोट (गुजरात)
1 सं. राजेन्द्र केडिया (कोलकाता)
1 डॉ. ताराचन्द पंड्या 'श्याम', रायपुर
1 आचार्य नर्मदा प्रसाद मिश्र 'नरम' रायपुर

सम्पर्क

प्रधान सम्पादक : राष्ट्रसेतु
जगदीश यादव
एम.आई.जी.-14, हाउसिंग बोर्ड कालोनी
कचना/पो.आ.-सड्डू, रायपुर (छ.ग.) - 492014
Mob. : 91909 - 11282

Jagdish Yadav
Chief Editor, Rashtrasetu
M.I.G.-14, Housing Board Colony
Kachna, P.O.-Saddu, Raipur (C.G.) - 492014
Email : printxflex@gmail.com

- **Bank Account : jagdish singh yadav** A/c. No. 63045195895, State Bank of India, Motibagh Raipur, (C.G.) / IFSC Code : SBIN 0030443

- प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी जगदीश यादव द्वारा मिश्रा भवन, आमानाका, रायपुर से प्रकाशित एवं यादव प्रिन्टर्स, कोटा वार्ड रायपुर द्वारा मुद्रित ।
- किसी भी रुप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित ।
- सभी पद, सेवा, लेखन अवैतनिक एवं मानदेय रहित ।
- न्याय का क्षेत्र रायपुर (छ.ग.) ।
- राष्ट्रसेतु में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों/शोधार्थियों के अपने हैं, पत्रिका भी उनसे सहमत हो, यह आवश्यक नहीं ।

पठन-पाठन में रुचि बढाइये, मांग कर नहीं खरीद कर पढिये ।

Scanned by TapScanner

वर्ष 8 अंक 25, जुलाई -सितम्बर 2016

ISSN 2320-3455

अनुक्रम

- **साहित्य/शोध**
  - डॉ. प्रभात त्रिपाठी की कहानियों में परंपरा और आधुनिकता का समावेश / पूनम तिवारी 1-3
  - पाश्चात्य जगत में प्रेम, विवाह और संबंद्ध-विच्छेद/डॉ. सुप्रिया पी. 4-5
  - अस्तित्व संघर्ष और दलित नारी : सुनो शेफाली के विशेष संदर्भ में/ सुजिता पी. 6-7
  - स्त्री प्रतिरोध की चिनगारियाँ : प्रेमचन्द की कहानियों में / शहला के.पी. 8-10
  - प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के उपन्यासों में राजनैतिक चेतना / उमाकान्त गिरि 11-12
  - संत शिरोमणी मीरा के आत्मवृत्त में गुजरात / डॉ. गिरीश सोलंकी 13-15
  - नारी के संकल्प और संघर्ष का समन्वय इदन्नम / डॉ. कल्पना के बुद्धदेव 16-18
  - भूमण्डलीकृत क्रूरता का प्रतिरोध : कुमार अंबुज की लेखनी / मृदुला पी.एम. 19-21
  - स्त्री अस्मिता समकालीन स्त्री कविता में /विनीता टी.एन. 22-25
  - समकालीन कविता में बच्चों की बदलती दुनियाँ / बिन्सी पी. 26-29
  - बकरी : समकालीन जिन्दगी का दस्तावेज /डॉ. चन्द्रिका के. 30-31
  - गजल से यह गफलत क्यों / डॉ. मनु संस्कृति/शोध 32-34
  - लोकसंस्कृति का महत्व और कुबेरनाथ राय / डॉ. ज्योति दातीर 35-36
- **मीडिया / शोध :**
  - प्रश्नो के घेरे में चौथा स्तम्भ /डॉ. रामविनोद रे 37-39

छत्तीसगढ़ी / शोध :

- अधकचरा ज्ञान से लोग दिग्भमित / डॉ. विनय कुमारपाठ 40-42

शोधपत्र प्रकाशन हेतु संपर्क कीजिये

प्रिय शोधार्थियों **राष्ट्रसेतु** भारतीय-साहित्य एवं भाषा समन्वय की एक मात्र विश्वविद्यालयीन शोधपत्रिका है । यह बहुभाषी और समस्त शैक्षिक विषयक भी है । ISSN द्वारा रजिस्टर्ड इस त्रैमासिक पत्रिका में अपने शोधपत्र/शोध आलेख प्रकाशित करवाकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) की योजनाओं एवं सेवा नियमों का लाभ आसानी से प्राप्त कर सकते हैं ।

- प्रधान संपादक

छत्तीसगढ़ की वरिष्ठ कथा लेखिका

इन्दिरा राय का नया उपन्यास

बसेरा

रियायती मूल्य पर उपलब्ध

संपर्क : प्रधान संपादक, **राष्ट्रसेतु**

- प्रकाशक

Scanned by TapScanner

वर्ष 8 अंक 25, जुलाई -सितम्बर 2016
ISSN 2320-3455

प्रश्नों के घेरे में "चौथा स्तम्भ"

1 डॉ. रामविनोद रे

किसी भी राष्ट्र, देश, समाज, जाति, धर्म वर्ग व मानव समुदाय के सर्वांगीण विकासहेतु विश्वास से युक्त न्यायालय के पश्चात् चौथा स्तम्भ जनसंचार माध्यम को रेखांकित किया जाता है । भूमंडलीकरण के दौर में जहां पूरा विश्व विकास की ऊचाईयों को छूने की होड़ में लगा है वही मानव द्वारा संचालित चौथा स्तम्भ जनसंचार माध्यम अछूता नहीं रहा है । स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व जनसंचार माध्यम ने अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण निर्वाह करने व अंतिम निर्णय तक पहुंचाने में अपनी अहम् भूमिका अदा की जो इतिहास में वर्णित है । स्वतंत्रता संग्राम में चौथे स्तंभ की भूमिका इसकी पुष्टि करता है । आज जनसंचार माध्यम अपनी जिम्मेदारियों से डगमगाने लगा है, देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, नीतिगत समस्याओं के व्यक्तिगत रुपों से जूझने लगा है । जहां सात्विकता, सादगी, त्याग की भावना थी आज एक उत्पादनकर्ता के रुप में एक संगठन, समिति और आयोग के रुप में स्थापित है । जनसंचार का कार्य लोगों के विचारों को लोगो तक पहुचाने का ही नहीं बल्कि उसे आचार संहिता के रुप में प्रतिपादित करने का कार्य भी है । आज प्रत्येक वस्तु के उत्पादन की भांति विचारों, घटनाओं का भी उत्पादन किया जाने लगा है, जो अत्यंत सोचनीय है । उत्पादन की इसी प्रक्रिया के कारण

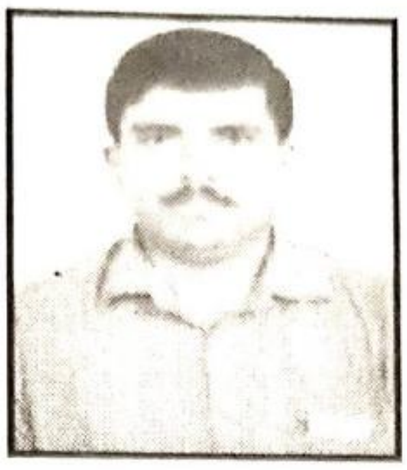

आज संचार बेचा व खरीदा जाता है जो अत्यंत सोचनीय है । स्वार्थ की वे सारी सीमाए लाँघ जाते हैं जो समाज के हित में नहीं है । अत: व्यवसायीकरण का स्थान ग्रहण करने लगा है । व्यावसायीकरण की इस प्रक्रिया के फलस्वरुप संवेदनशील मुद्दों को भी प्रोपेगंडा के रुप में अपना टी.आर. पी. जुटाने में लगे पड़े हैं । यह अचानक न तो आकाश से टपका और न धरती फाड़ कर बाहर निकला है । हमसे निकला हमारा प्रतिरुप है गोधराकांड, राममंदिर बाबरी मस्जिद, 1984 के सिक्ख दंगे, मुजफरनगर के दंगे और वर्तमान में चल रहे असहिष्णुता आदि जैसे संवेदनशील मुद्दो पर चल रहे विभिन्न संचार माध्यम की क्या भूमिका हो यह निर्धारित किया जाना अत्यंत आवश्यक है ।

वर्तमान में समाचार को तिल को तार बनाकर प्रस्तुत करने की परंपरा प्रचलित है ताकि टी.आर.पी. को बढाया जा सके एक आम व्यक्ति किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को थप्पड़ मारे तो प्रोपेगंडा बनने लगता है और सारे न्यूज चैनल में मुख्य विषय के रुप में प्रसारित होता है । यदि आम व्यक्ति केवल थप्पर ही नहीं खाता बल्कि शोषत और प्रताड़ित भी होता है तब भी समाचार के विषय से भी वंचित रहता है । आज संचार माध्यम पूंजीपति वर्ग, सत्ताधारी वर्ग, राजनीतिक पार्टियों, एवं व्यक्तिगत स्वार्थी हेतु सुविधा के अनुरुप छवि बनाने का प्रयास करते हैं । समस्या को बेचना और समस्या का समाधान करना दोनों में फर्क होता है । समाचार सामान्य से विशेष की ओर अग्रसर होता है जिसमें माध्यमों की अहम् भूमिका होती है । वर्तमान में हैदराबाद की घटना को राजनीतिक जामा पहनाने का प्रयास किया गया । राजकिशोर अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि तो ये वह आदर्श और प्रेरणारहित दुनिया है जो हमारी पत्रकारिता का मुख्य आधार है। ये बाहर से सवर रही, लेकिन अंदर से बिल्कुल खोखली हो रही दुनिया है । इसके सामने न कोई ऊँचे विचार है और न इसकी प्रेरणा के केंद्र में कोई बड़ा मूल्य है । पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य: राजकिशोर वर्ष 2005 वाणी प्रकाशन पृष्ठ 38 । आज अचानक माध्यमों से विश्वसनीयता घटने लगी है । राजनीतिक सत्ता की अनुगामिनी टी.आर.पी. और भविष्य में अपना स्थान निर्धारित करना आदि कई कारण हो सकते हैं । इनके समाज के प्रति एक नैतिक दायित्व है । किसी भी धर्म, जाति, वर्ग, समुदाय, राजनीतिक संगठन, व्यक्ति,

Scanned by TapScanner

कम्पनी, आदि की छवि बनाना है बिगाड़ना नहीं, बल्कि सत्य का अन्वेषण करते हुए परिणाम तक पहुचाना है । यह सत्य तब तक जायज माना जाना चाहिए जब तक मानवता, मूल्य, देश,समाज, राष्ट्र की अवधारणा को चोट न लगे पत्रकारिता सदैव वासुदेवकुटुम्बकम की अवधारणा पर होनी चाहिए, जन विरोधी तत्वों को शक्तिनहीं मिलनी चाहिए । 60 के दशक में मैंने राजनीतिक होश संभाला और मुझे तब बडा आश्चर्य होता था कि अखबार डॉ राम मनोहर लोहिया जिनका मैं उन दिनों प्रशंसक था,के वक्तव्यों और कार्यक्रमों के समाचार तो प्रकाशित ही नहीं करते थे और करते भी थे तो बहुत संक्षेप में या विकृत करके । इसके विपरीत मामूली से मामूली कांग्रेसी का मूर्खतापूर्ण, अतार्किक, और अपरिपक्व बयान प्रमुखता से छापते थे लेकिन मार्च 1977 के बाद वही डॉ लोहिया अचानक महत्वपूर्ण हो गए और पत्रपत्रिकाओं में विस्तार से उनकी चर्चा होने लगी । कॉर्पोरेट मीडिया, दलाल स्ट्रीट दिलीप मंडल, राजकमल प्रकाशन, भूमिका, वर्ष 2011 पृष्ठ 44

न्यूज चैनल के उच्च पदों में बैठे विचारकों की मनोभावना है कि मीडिया सहृदयता, समन्वयता, समाज सुधार की भावना ढोंगी, खोखली होने लगी है । विद्वत जनों के विचार अक्सर लोगों की मानसिकता को प्रभावित करते हैं । पत्रकारिता जगत, व्यवसायिक संगठन व समाचार एजेंसी उन्हीं के मंतव्यों पर चलने लगते हैं । कुछ मीडिया विश्लेषक काफी समय से ये कहते रहे हैं कि भारतीय मीडिया का कॉरपोरेटीकरण हो गया है और उसमें यह क्षमता नहीं कि वह लोक कल्याणकारी भूमिका निभाए । भारत में बाजरवाद के प्रभुत्व के साथ मीडिया के कॉर्पोरेट बनने की प्रक्रिया शुरु हो गई है और अब यह प्रक्रिया पूरी हो चुकी है ट्रस्ट संचालित द ट्रिब्यून के अलावा देश के हर प्रमुख मीडिया के सन्दर्भ में चाम्सकी, मेक्चेस्नी, एडवर्ड एस हरमन, जेम्स करेन, मेक्वेल पिल्गर और अन्य लोग यह बात कहते रहे हैं कि मीडिया अब कॉर्पोरेट हो गया है । (कॉर्पोरेट मीडिया, दलाल स्ट्रीट दिलीप मंडल, राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2011, पृ9)

औद्योगिक संस्था के रुप में परिवर्तित होकर शेयर बाजार, सस्ते दामों में जमीन की खरीद-फरोदत धड़ल्ले से हो रही है आचार संहिता को दरकिनार कर व्यक्तिगत रुप से लाभ उठाने का सिलसिला जारी है गया है । मीडिया कुमार को नौकरी करने के बदले वेतन मिलता है, लेकिन केंद्र सरकार का मान्यता प्राप्त पत्रकार होने के नाते उसे सरकार से भी बहुत कुछ मिलता है । मिसाल के तौर पर उसे केन्द्रीय दिल्ली में डी-2 केटेगरी का एक फ्लैट सरकार से मिला है जिसका मार्किट रेट एक लाख रुपया महीना तक हो सकता है । हो मड कैरियर आई ए. एस अफसरों को भी ऐसे ही फ्लैट मिलते हैं । मिडिया कुमार को रेल यात्रा का आधा किराया राजधानी और शताब्दी ट्रेनों में किराया में 30 फीसदी की छूट.... विदेश यात्रा पर कैमरा या लैपटॉप जैसे गेजेट्स लेकर आते है और इस पर उन्हे कस्टम ट्यूटी भी नहीं चुकानी पड़ती। उन्हें केंद्र सरकार के कर्मचारियों और अधिकारियों की भांति मुफ्त चिकित्सा सेवा.... ऑपरेशन और इलाज पर उन्हें कुछ भी खर्च नही... सरकारी विभाग उन्हें अपने खर्च से टूर पर ले जाते हैं और उनकी आवभगत करते है (कॉर्पोरेट मीडिया, दलाल स्ट्रीट, दिलीप मंडल, राजकमल प्रकाशन पृष्ठ 94)

इस आम व्यक्ति द्वारा मेहनत की कमाई से दिए गए टैक्स को व्यक्ति विशेष पत्रकारों को बेतहासा सुविधाए उपलब्ध कराया जाना पत्रकारिता जगत के निष्पक्ष भावना व जनसेवा पर प्रश्न चिन्ह लगाना है, पत्रकारिता जगत को कलंकित करना है । सरकार सभी पत्रकारों को विशेष फण्ड और सुविधाएँ उपलब्ध कराती है जो प्रेस कौंसिल एक्ट में उल्लेखित है । सरकार सदैव मीडिया मैनेजमेंट करने की कोशिश करती है जिसके लिए पत्रकारों को पुरस्कारों से सम्मानित करना ताकि आलोचनात्मक टिप्पणी से बचा जा सके, जरूरत पड़ने पर मीडिया सलाहकार के रुप में मनोनीत किया जा सके । मीडिया सलाहकार से पत्रकार और पत्रकार से मीडिया वर्तमान में द्विपक्षी भूमिका अदा करने की होड़ लगी है । पत्रकारों को सरकार नियोक्ताओं और विज्ञापनदाताओं द्वारा दिए जानेवाले प्रलोभनों से बचना चाहिए (कॉर्पोरेट मीडिया दलाल स्ट्रीट राजकमल प्रकाशन पृ. 17)

अभी हाल में घटी राजनीतिक

Scanned by TapScanner

गलियारों के हलचलों पर प्रख्यात मीडियाकर्मी ओम थानवी जी फेसबुक में अपडेटेड करते हुए लिखते हैं - टी वी चैनल ने जे. एन. यू. की आग भडकाई, उसे हवा दी.... क्या यह किसी की मिली भगत में खड़ा हुआ षड़यंत्र था । क्या चैनल राजनीतिक प्रोपेगंडा का मोहरा बन रहे हैं । पता नहीं सच्चाई क्या है पर टी.वी. चैनल ने ही बाद में घालमेल वाले उन वीडियो टुकड़ो की पोल खोली है जिनके सहारे जे. एन. यू. को घेरने की कोशिश की गई है (फेसबुक) मुद्दों पर डिबेट पैनल बैठाया जाता है ताकि विषय की गहराई में पंहुचा जा सके, समझ को साफ किया जाए परन्तु अब ये मुद्दे साफ करने की बजाय जवाबदेही व जिम्मेदारी तय की जाती है जिसके परिणामस्वरुप समाज में अव्यवस्था का वातावरण फैलने लगता है । प्राइम टाइम में इस प्रकार का खेल अक्सर देखने को मिलता है । अप्रत्यक्ष रुप से पड़नेवालें प्रभावों का आंकलन कौन करेगा, जवाबदेही कौन लेगा । ओम थानवी जी एन.डी.टी.वी. इंडिया के रविश कुमार पर टिप्पणी करते हुए पक्षकारों की गरिमा पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए लिखते हैं पत्रकारों के संगठन क्या कर रहे हैं ? एन.बी.ए. एडिटर्स गिल्ड क्या शुतुरमुर्ग हो गए ? फर्जी वीडियो दिखानेवालों ने झट से उन्हें दिखाना बंद कर दिया था, जब उनकी पोल टी.वी.पर खुल गई (फेसबुक) आगे ओम थानवी जी लिखते है लेकिन अगर वे किसी षड़यंत्र में खुद शरीक नहीं थे या किसी झासे में आ गए थे, तो इसकी सफाई उन्होंने पेश क्यों नहीं की, खेद क्यों प्रकट नहीं किया ?... दाल में बहुत काला है । (फेसबुक) विश्वदीपक को जी. न्यूज पर दिखाए गए खबरों के कारण इस्तीफा देना पड़ा, डेली न्यूज एनालिसिस के सुधीर चौधरी और जी. न्यूज को पांच पुरस्कार व एस. चंद्रा द्वारा राजनीति में प्रवेश से विश्वसनीयता खोने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता । आज ऐसे अनेक सवाल खड़े होने लगे है मीडिया को नए परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है । क्या यह संभव नहीं कि दैनिक मीडिया कार्यों को निपटाने के साथ-साथ नये युग के उसके संजालो ने नए सवालों को समझने उनकी व्यवस्था करने और व्यापक नई नीतियाँ तय करने के लिए कोई केंद्रीय मीडिया आयोग बनाया जाए, जो इस ग्लोबल सूचना सुपर हाइवे वाले तमाम संजाल की नीतियां, कार्यक्रमों, अनुशासनों नियमों के बारे में रिपोर्ट तैयार करे जो उसके लिए कारगर रहे । जिसमें छोटे-बडे सब तरह के सवाल जवाब रहे (मीडिया समकालीन सांस्कृतिक विमर्श, सुधीश पचौरी वाणी प्रकाशन, वर्ष 2011, पृष्ठ 169) । वर्तमान में इस सचाई को नकारा नहीं जा सकता है कि आज बड़ी-बड़ी मीडिया कंपनिया कर्ज में डूबी हुई हैं जिसे जन मीडिया नामक पत्रिका में मीडिया के घटनाक्रम में लिखा गया है-कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के रजिस्ट्रर ने खुलासा किया कि पांच भारतीय मीडिया कम्पनी-एन.डी.टी.वी., न्यूज 24 और नेटवर्क 18 या तो मुकेश अम्बानी के ऋणी है या महेन्द्र नाहटा के मुकेश अम्बानी रिलायंस उद्योग के मालिक होने के । साथ-साथ सबसे अमीर भारतीय भी हैं, वहीं महेन्द्र नाहटा उधोगपति होने के साथ-साथ अम्बानी के रिलायंस के नए टेलिकॉम उपक्रम और रिलायंस जियो बोर्ड के सदस्य है आगे लिखा गया है-अम्बानी, नाहटा और उधोगपति अभय ओसवाल ने पांच मीडिया कंपनियों में ऋण और निवेश के रुप में 10-100 करोड़ तक का निवेश किया । ऐसे में तीन उधोगपतियों का इन मीडिया समूहों पर 20 से लेकर 70 फीसदी तक नियंत्रण हो चुका है । (जन मीडिया, संपादक-अनिल चमड़िया अंक - फरवरी 2016 पृष्ट-30)

सन्दर्भ :

1. पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, वर्ष 205
2. कॉर्पोरेट मीडिया दलाल स्ट्रीट दिलीप मंडल, राजकमल प्रकाशन वर्ष 2011
3. मीडिया समकालीन संस्कृति विमर्श सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन वर्ष 2011
4. जन मीडिया संपादक-अनिनल चमड़िया अंक फरवरी 2016 5. फेसबुक

- सहायक प्रोफेसर, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड (केरल)

Scanned by TapScanner